१४१. बढो प्रेमियो ले सतरंगा

बढो प्रेमियो ले सतरंगा बोलो जयजयकार, मेहेरकी बोलो जयजयकार
जयजयकार तुम्हारी सुनकर भागे सर्व विकार ॥धृ.॥

सतरंगेके सात रंगमे सात तत्व दिखलाये
प्रेम त्याग संयम सेवासे पूर्ण समर्पण होवे
जो सतरंगा ऊँचा धरलो कभी न होगी हार ॥१॥

काम क्रोध मद लोभ मोह और मत्सररुपी बैरी
ईर्षा तृष्णा द्वेष लालसा जीवनको सब घेरी
ये है रावण कंस यही है, इनको कर दो पार ॥२॥

ऊँचेसे ऊँचेका झंडा ऊँचाही फहरावो
आगे बढा कदम ना फिरसे पीछे कभी हटावो
जीवनके सब रंग इसीमे जीवनका ये सार ॥३॥

Scanned by CamScanner